FIRST PAGE OF THE ARTICLE FOR THE YEAR - 2020-21 & 2022-23

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING
COLLEGE, MADHUPUR
(JHARKHAND)

(U.G.C. Approved Peer Reviewed Refereed Journal) ISSN No. - 2319-5908

Education : Shodh Sandarsh-VIII, Vol.-XXVII, June-Sept. 2020, Page : 162-164

General Impact Factor : 1.7276, Scientific Journal Impact Factor : 4.713

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के रुचियों एवं व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन

जनार्दन यादव डॉ. नीता तिवारी***

किसी भी व्यक्ति के जीवन में सफलता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। व्यक्ति अपनी शिक्षा किसी न किसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर ही प्राप्त करता है। प्रायः बालक अपने जीवन का जो भी लक्ष्य तय करता है उसमें उसके माता–पिता, परिवार के सदस्य, उसके गुरुजन, उसकी रुचियां, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, अभिवृति, व्यक्तिगत मूल्यों का प्रभाव होता है। कोई भी व्यक्ति अपने मिलने वाली सफलता को किस दृष्टि में स्वीकार करता है इसके अतिरिक्त अन्य परिस्थितियों तथा बालक के घर पास पड़ोस या उसके व्यक्तित्व पर भी निर्धारित होता है। मानव जीवन सभी रूपों में सर्वश्रेष्ठ हैं। अनेक प्रकार के मूल्यों से आत्मसात मानव जीवन में व्यक्तित्व का विशेष प्रभाव रहता है। यह व्यक्तित्व मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करते हैं तथा उनके आधार पर वह अपने जीवन के लिए लक्ष्य तय करते हैं और अपनी व्यवसायिक आकांक्षाओं का भी निर्माण करते हैं। अतः शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया का केंद्र बिंदु होता है और उसके अंदर रुचियां एवं व्यवसायिक आकांक्षा का क्या स्तर है इसको पहचानने की आवश्यकता है, जिसके आधार पर वह अपनी शिक्षण को प्रभावशाली बनाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के रुचियों एवं व्यवसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

रुचि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व की एक अत्यंत महत्वपूर्ण बीमा है। रंग–रूप, शारीरिक गठन, मानसिक योग्यता, स्वभाव, आचार–विचार, अभिवृत्ति, बुद्धि इत्यादि की तरह रुचियों में भी व्यक्तिगत विभिन्नता में पाई जाती है। इसके साथ विभिन्न विषयों, प्रकरणों, व्यक्तियों, वस्तुओं, क्रियाओं, व्यवसाय आदि के प्रति व्यक्त की रुचियां भिन्न–भिन्न होती हैं। कोई व्यक्ति प्रशासनिक अधिकारी बनना चाहता है तो कोई डॉक्टर, कोई इंजीनियर तो कोई वकील, कोई व्यवसायिक उद्यमी बनने का इच्छुक होता है। किसी व्यक्ति को गणित अच्छा लगता है तो किसी को इतिहास,किसी को दूरदर्शन देखने की। इस प्रकार व्यक्ति की रुचियां अलग–अलग होती हैं। यही कारण है कि शैक्षिक एवं व्यवसायिक परामर्श और निर्देशन प्रदान करते समय इन सब चीजों को ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है। पढ़ाते समय रुचियों का ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक है। इसलिए एक अच्छा शिक्षक वही है जो छात्रों की रुचियों को ध्यान में रखकर कार्य करता है। इस प्रकार शोध के माध्यम से शिक्षकों की रुचियां को जानने का प्रयास किया गया है।

वर्तमान समय में व्यवसाय चयन एक महत्वपूर्ण विषय है। आर्थिक दृश्टि से हो या समाज कल्याण या राष्ट्र के हित में हो, किसी भी व्यक्ति के काम करने की मात्रा एवं उस कार्य को सोचने की मात्रा उसके आकांक्षा स्तर पर आधारित होता है। किसी व्यक्ति के व्यवसाय के प्रति जो आकांक्षा है उसे ही हम व्यवसायिक आकांक्षा कहते हैं। व्यक्ति का जीवन निर्माण आकांक्षा स्तर द्वारा प्रभावित होता है। एक व्यक्ति क्या करना चाहता है वह इस दिशा में कितना प्रयास और सफलता प्राप्त करना चाहता है यह उस व्यक्ति के आकांक्षा स्तर पर निर्भर करता है। यही कारण है कि व्यवसायिक आकांक्षा स्तर व्यक्ति के लक्ष्य को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। आज के वर्तमान युग में व्यवसायिक आकांक्षा पूरी तरह से विद्यालयों पर आधारित हो गई है और विद्यालय में जिस व्यक्ति के ऊपर आधारित है वह शिक्षक है। शोध के माध्यम से यह भी जानने की प्रयास किया गया है कि व्यवसायिक आकांक्षा शिक्षक अपने छात्रों के अंदर किस प्रकार से विकसित करता है। इस प्रकार शोधकर्ता ने पाया कि माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की रुचियों एवं व्यवसायिक आकांक्षा का अध्ययन न के बराबर हुआ है। इसी क्रम में शोधकर्ता ने समस्या के चयन हेतु और उपरोक्त शोध को समस्या की चुनौती के रूप में स्वीकार किया।

* *शोध छात्र, शिक्षक शिक्षा विभाग, कुटीर पी.जी. कॉलेज, चक्के, जौनपुर*

** *असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, कुटीर पी.जी. कॉलेज, चक्के, जौनपुर*

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING
COLLEGE, MADHUPUR
(JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

OUR PUBLICATIONS

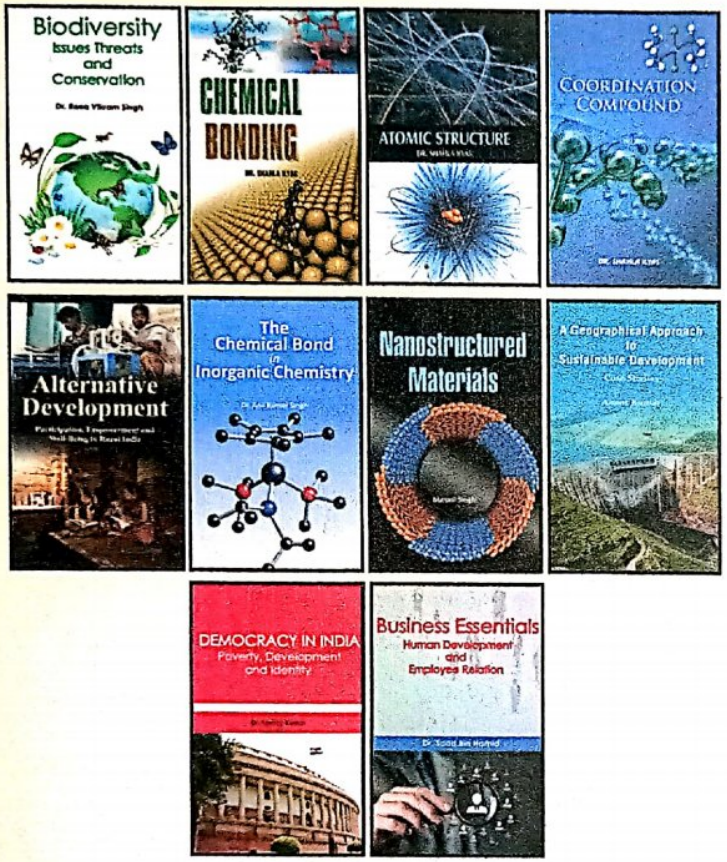

Globus Press
448, Pocket-V, Mayur Vihar Phase-1, Delhi-110091 (INDIA)
Ph. : 011-2275 3916,22793136

ISSN 0974-9888

वर्ष 12 अंक 4 अक्टूबर-दिसम्बर 2020 मूल्य ₹ 2000

मतादर्श

सामाजिक विज्ञान, मानविकी एवं वाणिज्य की शोध पत्रिका

Peer Review & Refereed
A Multi Subject Bilingual Journal
IMPACT FACTOR: 4.7432

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING COLLEGE, MADHUPUR (JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

Ulatrasonic Studies on Some Schiff Bases

Rachana Kumari

Assist. Prof. of Physical Science, Department of Education, Chanakya Teachers Trainning College, 52 Bigha Sapaha, Madhupur, Deoghar, Jharkhand

Abstract:

The present study, the Schiff base of benzaldehyde with p-bromoaniline and benzaldehyde with p-nitroaniline prepared .The ultrasonic study have been done and different acoustical properties of such as Ultrasonic velocity (Us), adiabatic compressibility (bS), Specific acoustic impedance (Z) and Intermolecular free length (L_f) in three different solvents viz DMSO, acetone and DMSO+Acetone mixture have been investigated.The ultrasonic study on Schiff's bases concluded that the ultrasonic velocities with varying concentration of schiff's bases were found to be highest in DMSO and lowest in acetone and when proportion of DMSOdecreases, the corresponding ultrasonic velocity through the mixture alsodecreases.Intermolecular free length(L_f) decrease linearly and hence increased in ultrasonic velocity observed with increase in concentration of Schiff base. It was occurred due to strong interaction between solvent and ion molecules suggesting a structure promoting behavior of the added electrolyte. The specific acoustic impedance (Z) increased with the increase in concentration of Schiff base. When concentration of electrolyte was increased, increase in ionic strength is observed hence the thickness of oppositely charged ionic atmosphere is decreases. This is suggested by increase in acoustic impedance with concentration in system. It was seen that when concentration in system increases the intermolecular free length is decreases. As the concentration of solution increases, the adiabatic compressibility is decreases. The decrease in to collection of solvent molecule around solute molecules indicates that there are solute-solvent interaction are presence. This indicates that there is strong interaction between solvent and solute molecule in solution and the solution is becoming more and more compressible.

Introduction

Compounds containing azomethine group (–C=N–) usually known as Schiff bases which have been synthesized by the condensation of primary amines with active carbonyls compounds such as aldehydes or ketones. The term Schiff's bases were named to honour the Scientist Ugo Joseph Schiff, one of the founders of modern chemistry. The Schiff base metal complexes have occupied an important position inthe modern inorganic chemistry. The interest in these compounds arises fromtheir various applications in the field of bioinorganic chemistry. The Schiffbases are known for their biological importance. Recently

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING
COLLEGE, MADHUPUR
(JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO UPBIL04292
RNI REG NO UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 222-224

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol -13, No -III, Issues-18, YEAR- Dec -2020

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेग, रुचियों एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में अध्ययन

जनार्दन यादव
नीता तिवारी
Email : rajirao30k@gmail.com

Received- 21.11.2020, Revised- 26.11.2020, Accepted - 29.11.2020

सारांश– किसी भी व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। बालक अपने शिक्षा को ध्यान में रखकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है तथा जीवन का जो लक्ष्य निर्धारित करता है उस पर उसके माता–पिता, परिवार के सदस्यों की रुचियां, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, शिक्षा, अभिवृत्ति, व्यक्तिगत मूल्यों का प्रभाव पड़ता है। कोई भी बालक मिलने वाली सफलता को किस दृष्टि से स्वीकार करता है। इसके अतिरिक्त अन्य परिस्थितियां तथा बालक के घर तथा पास पड़ोस हुआ वातावरण का व्यक्तित्व बालक को प्रभावित करता है। मानव जीवन सभी रूपों में सर्वश्रेष्ठ है। अनेक प्रकार के मूल्यों से आत्मसात मानव जीवन में व्यक्तित्व का विशेष प्रभाव पड़ता है। यह व्यक्तित्व मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करते हैं तथा उनके आधार पर वह अपने जीवन के लिए लक्ष्य तय करके व्यवसायिक आकांक्षाओं का निर्माण करते हैं। व्यक्तित्व मानव जीवन के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण होते हैं। किसी भी समाज में व्यक्तित्व का विकास एक दिन में नहीं अपितु मनुष्य के दीर्घ अनुभव के परिणाम स्वरूप होते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेग, रुचियों एवं व्यवसायिक आकांक्षाओं का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन किया गया है।

कुंजीभूत शब्द–यक्तित्व, बालक, प्रभावित, सर्वश्रेष्ठ, आत्मसात, मानव, व्यक्तित्व ।

1. शोध अध्येता 2. असिस्टेंट प्रोफेसर शिक्षक शिक्षा विभाग, कुटीर पी०जी० कॉलेज, चवके जौनपुर (उ0प्र0), भारत

अनुरूपी लेखक

अभिवृत्ति किन्हीं परिस्थितियों में व्यक्तियों या वस्तुओं के प्रति संगत ढंग से प्रतिक्रिया करने की स्वाभाविक तत्परता है। जिसे सीख लिया गया है तथा जो व्यक्ति विशेष के द्वारा प्रतिक्रिया करने का विशिष्ट ढंग बन गया है। अभिवृत्ति के द्वारा ही छात्रों में किसी कार्य, परिस्थिति योजना को बनाने से होती है। यह धनात्मक एवं ऋणात्मक हो सकती है। जो छात्रों के अनुभव के द्वारा विकसित होती है जिसकी प्रवृत्ति वातावरण जन्म होती है। इसके विकास में प्रत्यक्षीकरण तथा संवेगात्मक कारकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। रुचि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व के एक महत्वपूर्ण विमा है। शारीरिक गठन, मानसिक योग्यता, स्वभाव, आचार–विचार, बुद्धि,अभिक्षमता, अभिवृत्ति इत्यादि तरह की रुचियों में भी व्यक्तिगत विभिन्नता में पाई जाती हैं। छात्रों के रुचि के द्वारा कोई प्रशासनिक अधिकारी बनना चाहता है, कोई डॉक्टर, वकील, इंजीनियर ये व्यक्ति के विशेषताओं और रुचियों के आधार पर ही होती है। युवा वर्ग किसी व्यवसाय विशेष की आकांक्षा रखते हैं परंतु उसे उस व्यवसाय में अपेक्षित व्यक्तित्व एवं व्यवसायिक योग्यताओं के विकास में जानकारी नहीं है। कई बार तो उसका विषय वर्ग भी उसकी व्यवसाय का आकांक्षा से मेल नहीं खाता है। ऐसी स्थिति में वह भविष्य में अपने इच्छित व्यवसाय नहीं अपना पाते तथा कई मनोवैज्ञानिक समस्याओं का शिकार हो जाते हैं। यदि उपयुक्त समय पर उन्हें जानकारी प्राप्त हो तो वे अपनी आकांक्षा के अनुरूप विषय वर्ग का चयन कर सकते हैं अथवा विषय वर्ग के अनुरूप अपनी आकांक्षा में परिवर्तन कर सकते हैं।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण– सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधो एवं अभिलेखों आदि से है, जिसके अध्ययन से अनुसंधान कर्ता को समस्या चयन परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रुपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है स्टूडर्ड एवं अन्य (2010) ने विद्यार्थियों के हिंसात्मक व्यवहार पर अध्ययन किया अपने शोध में आप ने पाया कि उम्मीद के खत्म होने से ही हिंसात्मक व्यवहार का आरंभ होता है और आयु बढ़ने के साथ–साथ कम होता जाता है। भविष्य के प्रति आशान्वित रहने की भावना को यदि विकसित किया जाए तो हम विद्यार्थियों के हिंसात्मक व्यवहार को कम कर सकते हैं। रहमान एवं नाहर (2013) ने बांग्लादेश के किशोर एवं किशोरियों की आक्रामकता का शैक्षिक उपलब्धि एवं स्थानीय वातावरण के संबंध में अध्ययन किया अपने अध्ययन में पाया कि लड़कों में लड़कियों की अपेक्षा अधिक आक्रामकता होती है। अपने अध्ययन मे यह भी पाया कि जिन विद्यार्थियों में उच्च आक्रामक्तामता पाई जाती है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होती है जोशी एवं रिजवान 2015 में किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेग के प्रभाव का अध्ययन किया और अपने अध्ययन में पाया कि छात्र और छात्राओं की आक्रामकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया किंतु लड़कियों की आक्रामकता लड़कों की तुलना में अधिक होती है आक्रामकता का स्तर लड़के और लड़कियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया आक्रामकता स्तर का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि तथा छात्राओं की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा एवं उपलब्धि वाले किशोरों एवं आक्रामक स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा उसे किशोरियों एवं शैक्षिक

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING
COLLEGE, MADHUPUR
(JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

©Ayushman Publication House
Multi-Disciplinary Research Journal *Ayushman*
Vol. 6 No. 2 Page 179-195 Jun 2021
ISSN 02349-0071 Peer Review Journal

इस्लामी शिक्षा दर्शन

*डॉ. दिनेश कुमार यादव

जीवन संबंधी कुछ आधारभूत प्रश्न हैं; जैसेमनुष्य का सच्चा स्वरूप क्या है? सृष्टि की अंतिम सत्ता क्या है? उसमें मनुष्य का वास्तविक स्थान क्या है? आदि। इन प्रश्नों का उत्तर देना दर्शन का काम है। अनुभवों के आंतरिक अर्थों की खोज उसका परम लक्ष्य है। जो विचार सब सीमाओं को पार करता हुआ अंतिम अर्थ तक पहुँचने का उद्देश्य लिए हुए न हो, वास्तव में उसे दार्शनिक विचार नहीं कह सकते। अनुभवों के पारस्परिक विरोधों को दूर करना और उनमें अनुरूपता एवं अनुकूलता स्थापित करना दर्शन का मुख्य कार्य है। विज्ञान जगत और जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में एक विशेष सुसंगठित ज्ञान का प्रतिपादन करता है। विज्ञान केवल प्रस्तुत वस्तुओं तथा घटनाओं का वर्णन है परन्तु उनकी व्याख्या करना दर्शन का काम है। दर्शन सम्पूर्ण संसार को एक सामूहिक एवं संगठित ज्ञान प्रदान करता है, जिससे मनुष्य शाश्वत सत्य की दिशा में अग्रसर होता है।

कुरान के दृष्टिकोण से वास्तविकता के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की दार्शनिक विधि वह नहीं है, जिसे साधारणतः दार्शनिक अपनाते हैं। कुरान का कहना है कि लोगों के पथभ्रष्ट होने का मूल कारण यह है कि वे केवल अनुमान से काम लेते हैं तथा अटकल और अनुमान को ही सत्य की खोज का एकमात्र साधन समझते हैं और फिर अनुमान से वास्तविकता के प्रति जो कुछ विचार वे निर्धारित कर लेते हैं, उसके आगे हठधर्मी और पक्षपात के कारण किसी की नहीं सुनते। जबकि उनके पास काल्पनिक बातों और अनुमानों के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता।

कुरान का कहना है कि वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त करने का सही तरीका यह है कि हम हर प्रकार के पक्षपात से रहित होकर स्वतंत्रतापूर्वक उन पैगम्बरों का बयान सुनें, जिनका दावा है कि वे कोई बात अटकल और अनुमान से नहीं कहते। उनकी कोई बात काल्पनिक नहीं होती बल्कि वे जो कुछ कहते हैं, वह उस 'ज्ञान' पर अवलम्बित होता है, जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान किया है। पैगम्बरों का बयान सुनने के बाद हम इस रहस्यमय जगत पर दृष्टि डालें और इसमें पाये जाने वाले सूक्ष्म संकेतों को व्यवस्थित क्रम में लायें तथा उनसे नतीजा निकाल कर यह देखें कि इस प्रत्यक्ष के पीछे स्थित जिस वास्तविकता की सूचना 'पैगम्बर' देते हैं, उसमें उसके लक्षण और उसकी ओर संकेत करने वाले चिन्ह पाये जाते हैं या नहीं। यदि उसकी ओर संकेत करने वाले चिन्ह पाये जाते हों, और यह जगत उसके यथार्थ होने का

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING
COLLEGE, MADHUPUR
(JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ) *with* International Impact Factor 7.352
Peer Reviewed Journal

e-ISSN No. 2394-8426
June-2023
Issue–I(V), Volume–XI

Issue on "Multidisciplinary Approach In Research" Dt.30-June-2023 With Collaborate Continuing Professional Development Event, New Mumbai

The Impact of Music on Human Development and Mental Health

Mr. Manoj Chatterjee
Assist. Professor in Music, Department of education
Chanakya Teachers Training College
Madhupur, Deoghar,

Abstract: *These activities not only allow one to express their deepest sentiments and states, but also have a good impact on those who participate in them. According to research in the sciences that are associated to music, effective participation in music can positively benefit a range of aspects of human existence, including physical, social, educational, and psychological (cognitive and emotional) ones. According to Biasutti and Concina (2013), there is a growing amount of empirical and experimental evidence on the general benefits of musical activity. Learning in and via music can occur in official contexts (like scheduled sessions in school) as well as non-formal settings (like at home with family and friends), frequently non-sequentially and not necessarily on intention, and in environments where involvement in music is encouraged.*

Keywords: *Human Existence, Psychological Development, Music Learning, Social Learning.*

Introduction: The 21 brand-new research articles included in this special edition broaden our understanding of the many ways that music can promote human development and wellbeing. Each essay in the book draws from the research of 88 researchers from 17 different countries and offers an illustration of how music can relate to other important aspects of human functioning. The papers collectively provide offer illustrations of many contemporary research approaches. These show how different research goals related to the larger benefits of music demand careful and appropriate methods. Poutine and other foods.Demonstrate how music education is predicted to improve students' sound encoding in the 9 to 15 age range and how it relates to reading abilities in terms of childhood and adolescence, for example. A different Finnish study by Saarikallio et al. illustrates the impacts of musical listening on teens' reported feelings of agency and emotional well-being, but it also demonstrates how these effects are highly variable by context and individuality. Stewart et al.'s Australian study of adolescents at risk for depression focuses on various facets of mental health. The essay explores how, despite existing research supporting the positive effects of music for mood regulation, music consumption can actually maintain or intensify a bad mood.

Studies have shown a connection between informal musical experiences in the home and specific aspects of language development, suggesting that younger, preschoolers can benefit from musical activities as well. A significant connection between melody perception and grammar acquisition was found in an India study by Politico et al., which was previously unrecognized in developmental research. Meanwhile, rhythm perception and production were the leading predictors of early children's phonological awareness. Barrett and associates in another preschool study, examined the attitudes and values of Australian early childhood and care practitioners about the role that music provides to young children's learning. Despite having little formal training and little personal musical experience, practitioners usually tended to have positive attitudes towards music; nevertheless, this was oriented towards music as a hobby.

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING COLLEGE, MADHUPUR (JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 7.352
Peer Reviewed Journal

e-ISSN No. 2394-8426
Sept-2023
Issue–III, Volume–XI

Effectiveness Of Concept Mapping Model And Concept Attainment Model In Geography Teaching At Secondary Levels

Author name- Sangita Das
Institution; Chanakya Teachers Training College, 52 Bigha, Sapaha, Madhupur, Deoghar, Jharkhand, 815353
Department of Education
Email- sangitaeducation88@gmail.com

Abstract: It is vital to take a quick glance at the idea of education, to have a deeper grasp of education and the specific research issue in this thesis, as it existed in the West and in India. Both the Hellenic and Christian traditions were present in Western culture. Two contradictory theories concerning human nature are included inside it. Greek perspective considered man as a logical animal and believed in Christianity perceived the human being as a Greek philosophers placed great emphasis on the dual and sensual character of men. and logic. Christianity introduced a further, more pervasive dualism. into the supernatural and natural sides of human nature. Man's ultimate goal is to serve God and experience delight and eternal life. Accordingly, educational objectives were established. Western intellectuals had varying perspectives on schooling. Socrates, for instance, saw it as a vehicle for bringing concepts of universal applicability. Aristotle viewed it as the formation of a sound mind in a sound body, placing emphasis on the growth of different human capacities. Milton viewed education as a tool that allowed people to have the abilities necessary to carry out a variety of official tasks during both times of peace and conflict.

Key points: Intellectual perspectives, Human nature, Human ability, conflict.

Introduction: Closer to home, the fact that the word "Shiksha" is derived from the Sanskrit verbal root "Shas" establishes the presence of the concept of education. In those days, the educated elite spoke Sanskrit as their primary language. Shas is an Arabic term that means "to discipline," "to teach," "to instruct," or "to control." Similar to "Vidya," which meaning "to know," is derived from the Sanskrit verbal root "Vid." The word "Vidya" actually refers to knowledge. India placed a strong emphasis on mental discipline and information development. The idea of education in India had a structural bias since, up until the formation of a more equal social order with the infusion of western ideas during the colonial period, it was thought that the right to education was only the province of upper castes. Therefore, the learned classes, Brahmins and Kshatriyas, Different roles were fulfilled by other castes lower on the social hierarchy in the through learning skills from family tradition and contributing to society. Family tradition-based education was another method of instruction that was very different from the formal education system in use before the Middle Ages period. An international university was located there during the ancient era. International students are being welcomed by Taxila. After the post Persian influence can be seen in cultural life throughout the Alexander period. Architecture, sculpture, and the arts. Buddhism contributed its own influence on Indian education that led to the establishment of Nalanda University which Bakhtiyar Khilzi demolished in 650 AD after it had existed for 650 years roughly 100 AD. Madrasa system evolution then came next.

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING COLLEGE, MADHUPUR (JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 7.352
Peer Reviewed Journal

e-ISSN No. 2394-8426
Sept-2023
Issue–III, Volume–XI

A Comparative Study of Psychological Well-being in Athlete and Non-Athlete Students in West Bengal

Author name- Soumen Ghorai
Institution; Chanakya Teachers Training College, 52 Bigha, Sapaha, Madhupur, Deoghar, Jharkhand, 815353
Designation- Assist. Prof. of Physical Education
Department of Physical Education
Email-soumenghorai286@gmail.com

Abstract:
The current study sought to investigate and compare the psychological well-being of athlete and non-athlete pupils. The study's population includes all female athletes (swimming and mountaineering) and non-athlete students at the Kalyani university, Kalyani Branch, who studied between 2021 and 2022. The sample is made up of 150 volunteers drawn from the general community via convenience sampling (40 swimmers, 40 mountaineers, and 120 non-athletes). The current study is descriptive and ex post facto. Data was gathered using Bartone's Hardiness Questionnaire. The Chi-square test was used to compare the psychological well-being of athletes and non-athletes. The findings revealed a strong association between psychological well-being and kind of activity (athlete vs. non-athlete) (; ; 1). The findings of one-way ANOVA revealed that the difference in psychological well-being between the two groups is statistically significant at the 95% confidence level. However, post hoc analysis revealed that only the difference between swimmers and non-athletes is significant. Swimmers, according to these data, show a higher level of psychological Well-being than the other two groups. They can cope with external challenges more easily, and one of the tactics they use is psychological well-being.

Keywords
Psychological well-being, Athletes, Non-Athletes, Swimming.

Introduction:

Over time, humans have discovered that some events can risk their health, balance, comfort, and adaption. However, research has shown that stress does not necessarily result in disease and maladaptation. Athletes' performance nowadays is influenced by a number of things. Athletes' mental abilities in various sports vary based on the demands of each discipline. Furthermore, in highly competitive settings where athletes' physical fitness reaches its peak, psychological variables play a critical part in their success. One of the most significant attributes of successful sportsmen is psychological well-being. It is a multifactor structure that everyone has to some degree, and it is made up of three components: commitment, control, and challenge. Hardy people have grasped the significance, worth, and purpose of themselves, their jobs, and their lives in general. They value effort over chance and believe that they have influence over life's occurrences. They think that events, both happy and terrible, are the result of one's deeds. They also see change as a constant and an opportunity for learning and growth, rather than a threat to their safety. Hardy people see occurrences as good and manageable rather than terrifying. Researchers believe that a number of factors influence the link between stress and disease. Certain qualities in some people boost their resilience to stress and help them avoid its

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING COLLEGE, MADHUPUR (JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

BHARATI INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH AND DEVELOPMENT (BIJMRD)

(Open Access Peer-Reviewed International journal)

Doi number: 12.2023-81282512

Available Online: www.bijmrd.com |BIJMRD Volume: 1 | Issue: 1 | Dec 2023 | e-ISSN: 2584-1890

Contribution of Physical education practice reflecting on student achievement

Soumen Ghorai

Assistant Professor, Department of Physical Education ,Chanakya Teachers Training College, 52 Bigha, Sapaha,,Madhupur, Deoghar, Jharkhand, 815353 Email.- soumenghorai286@gmail.com

Abstract- *Despite the fact that the theory/practice dichotomy in physical education (PE) practice seems to be challenging to manage, this study suggests that instructors may support students in developing holistic competencies, which include aspects of both theoretical and practical knowledge. Therefore, we work to re-evaluate how theory and practice relate to physical education practice and suggest ways that PE instructors might link different types of knowledge with their students. In doing so, we look at reflection, which has traditionally been one of the most widely used techniques for bridging theory and practice.*

Keywords: *Physical education, Practical knowledge, Theoretical knowledge, Holistic competence.*

Introduction: "Physical education (PE) students are supposed to acquire a broad variety of information about movement and/or though" (Arnold, 1979). Some of this information is seen to be more theoretical (knowledge of the body's workings or health-related topics, for example), while other knowledge is thought to be more practical (knowledge of various motor skills in and via movement and other types of movement learning). "Finding ways to teach PE that enables students to integrate and link many sorts of knowledge has been the main emphasis for decades. For example, over 25 years ago, McBride and Cleland" (Citation1998) argued that critical thinking was necessary, based on their assertion that 'cognitive difficulties must connect with movement-oriented activities' (42); their article's subtitle, 'Putting theory where it belongs', confirmed this. However, "recent studies have shown that theory and practice are still seen as a binary that makes it difficult to deal with in physical education practice. For instance, a Swedish research by Sternberg" (Citation2017) found that evaluations of students' comprehension of and via movement had been replaced with written assignments designed to gauge their theoretical knowledge of movement. Teaching anatomy and physiology as part of physical education has, in the words of Casey and O'Donovan (Citation 2015), "shifted the curriculum from a practical to a theoretical one" and brought parts of physical education from the playground and gymnasium into classrooms (354). Bowes (Citation2010) also questioned why students in New Zealand seem

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING COLLEGE, MADHUPUR (JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

OUTER JACKET/CONTENTS PAGE OF THE JOURNALS IN WHICH ARTICLE ARE PUBLISHED FOR THE YEAR- 2020-21 & 2022-23

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING
COLLEGE, MADHUPUR
(JHARKHAND)

Issue-08/Vol-27/June-Sep. 2020
ISSN No. 2319 - 5908
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Quarterly Journal

शोध संदर्श

शोध संदर्श

SHODH SANDARSH

शिक्षा, साहित्य, इतिहास, कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य आदि

Chief Editor :
Dr. V.K. Pandey

Editor :
Dr. V.K. Mishra
Dr. V.P. Tiwari

UGC Approved Peer Reviewed Journal

SCIENTIFIC JOURNAL IMPACT FACTOR SJIF No. 6.756

GENERAL IMPACT FACTOR GIF No. 1.7216

विविध ज्ञान - विज्ञान - विषय का मन्थन एवं विमर्श।
नव - उन्मेषी दशा - दिशा से भरा 'शोध - सन्दर्श' ॥

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING
COLLEGE, MADHUPUR
(JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

(U.G.C. Approved Peer Reviewed Refereed Journal) ISSN No. - 2319-5908

Education : Shodh Sandarsh-VIII, Vol.-XXVII, June-Sept. 2020, Page : 162-164

General Impact Factor : 1.7276, Scientific Journal Impact Factor : 4.713

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के रुचियों एवं व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन

जनार्दन यादव डॉ. नीता तिवारी***

किसी भी व्यक्ति के जीवन में सफलता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। व्यक्ति अपनी शिक्षा किसी न किसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर ही प्राप्त करता है। प्रायः बालक अपने जीवन का जो भी लक्ष्य तय करता है उसमें उसके माता–पिता, परिवार के सदस्य, उसके गुरुजन, उसकी रुचियां, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, अभिवृति, व्यक्तिगत मूल्यों का प्रभाव होता है। कोई भी व्यक्ति अपने मिलने वाली सफलता को किस दृष्टि में स्वीकार करता है इसके अतिरिक्त अन्य परिस्थितियों तथा बालक के घर पास पड़ोस या उसके व्यक्तित्व पर भी निर्धारित होता है। मानव जीवन सभी रूपों में सर्वश्रेष्ठ हैं। अनेक प्रकार के मूल्यों से आत्मसात मानव जीवन में व्यक्तित्व का विशेष प्रभाव रहता है। यह व्यक्तित्व मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करते हैं तथा उनके आधार पर वह अपने जीवन के लिए लक्ष्य तय करते हैं और अपनी व्यवसायिक आकांक्षाओं का भी निर्माण करते हैं। अतः शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया का केंद्र बिंदु होता है और उसके अंदर रुचियां एवं व्यवसायिक आकांक्षा का क्या स्तर है इसको पहचानने की आवश्यकता है, जिसके आधार पर वह अपनी शिक्षण को प्रभावशाली बनाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के रुचियों एवं व्यवसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

रुचि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व की एक अत्यंत महत्वपूर्ण बीमा है। रंग–रूप, शारीरिक गठन, मानसिक योग्यता, स्वभाव, आचार–विचार, अभिवृत्ति, बुद्धि इत्यादि की तरह रुचियों में भी व्यक्तिगत विभिन्नता में पाई जाती है। इसके साथ विभिन्न विषयों, प्रकरणों, व्यक्तियों, वस्तुओं, क्रियाओं, व्यवसाय आदि के प्रति व्यक्त की रुचियां भिन्न–भिन्न होती हैं। कोई व्यक्ति प्रशासनिक अधिकारी बनना चाहता है तो कोई डॉक्टर, कोई इंजीनियर तो कोई वकील, कोई व्यवसायिक उद्यमी बनने का इच्छुक होता है। किसी व्यक्ति को गणित अच्छा लगता है तो किसी को इतिहास,किसी को दूरदर्शन देखने की। इस प्रकार व्यक्ति की रुचियां अलग–अलग होती हैं। यही कारण है कि शैक्षिक एवं व्यवसायिक परामर्श और निर्देशन प्रदान करते समय इन सब चीजों को ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है। पढ़ाते समय रुचियों का ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक है। इसलिए एक अच्छा शिक्षक वही है जो छात्रों की रुचियों को ध्यान में रखकर कार्य करता है। इस प्रकार शोध के माध्यम से शिक्षकों की रुचियां को जानने का प्रयास किया गया है।

वर्तमान समय में व्यवसाय चयन एक महत्वपूर्ण विषय है। आर्थिक दृश्टि से हो या समाज कल्याण या राष्ट्र के हित में हो, किसी भी व्यक्ति के काम करने की मात्रा एवं उस कार्य को सोचने की मात्रा उसके आकांक्षा स्तर पर आधारित होता है। किसी व्यक्ति के व्यवसाय के प्रति जो आकांक्षा है उसे ही हम व्यवसायिक आकांक्षा कहते हैं। व्यक्ति का जीवन निर्माण आकांक्षा स्तर द्वारा प्रभावित होता है। एक व्यक्ति क्या करना चाहता है वह इस दिशा में कितना प्रयास और सफलता प्राप्त करना चाहता है यह उस व्यक्ति के आकांक्षा स्तर पर निर्भर करता है। यही कारण है कि व्यवसायिक आकांक्षा स्तर व्यक्ति के लक्ष्य को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। आज के वर्तमान युग में व्यवसायिक आकांक्षा पूरी तरह से विद्यालयों पर आधारित हो गई है और विद्यालय में जिस व्यक्ति के ऊपर आधारित है वह शिक्षक है। शोध के माध्यम से यह भी जानने की प्रयास किया गया है कि व्यवसायिक आकांक्षा शिक्षक अपने छात्रों के अंदर किस प्रकार से विकसित करता है। इस प्रकार शोधकर्ता ने पाया कि माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की रुचियों एवं व्यवसायिक आकांक्षा का अध्ययन न के बराबर हुआ है। इसी क्रम में शोधकर्ता ने समस्या के चयन हेतु और उपरोक्त शोध को समस्या की चुनौती के रूप में स्वीकार किया।

* *शोध छात्र, शिक्षक शिक्षा विभाग, कुटीर पी.जी. कॉलेज, चक्के, जौनपुर*

** *असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, कुटीर पी.जी. कॉलेज, चक्के, जौनपुर*

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING
COLLEGE, MADHUPUR
(JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

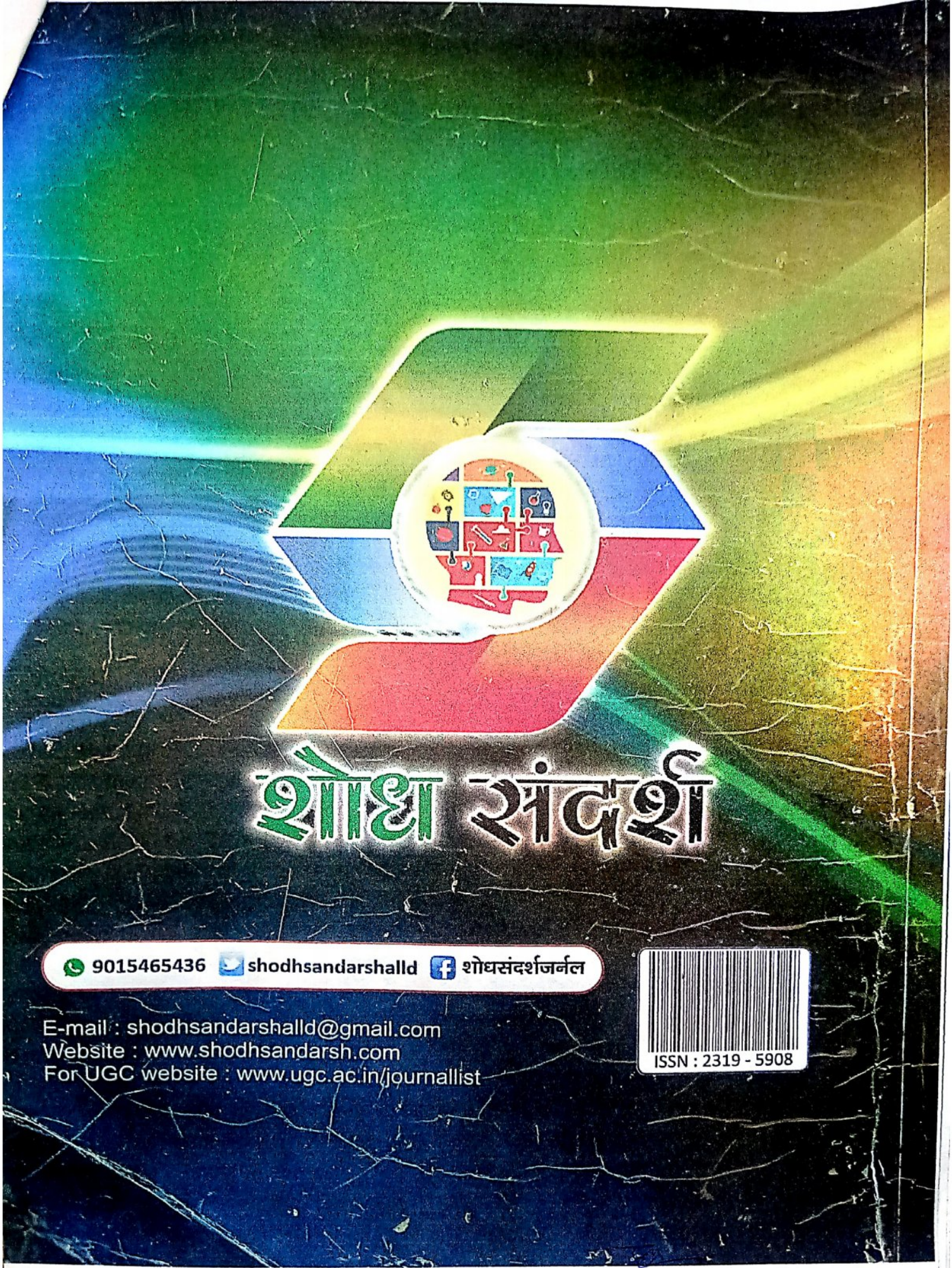

शोध संदर्श

9015465436 shodhsandarshalld शोधसंदर्शजर्नल

E-mail : shodhsandarshalld@gmail.com
Website : www.shodhsandarsh.com
For UGC website : www.ugc.ac.in/journallist

ISSN : 2319 - 5908

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING
COLLEGE, MADHUPUR
(JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

ISSN No. 2347-2944 (Print)
e-ISSN No. 2582-2454 (Online)
RNI REG. : UPBIL/2014/66218
I2OR Impact Factor: 7.500

ARYAVART SHODH VIKAS SANSTHAN
INTERNATIONAL Journal
BALLIA
(UTTAR PRADESH) INDIA
2013

RU546992204IN

ASVP
ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA

An International peer reviewed, open approach referred multi-disciplinary research journal

I2OR

Indexing By:
Indexing No.: 5900
International Institute of Organized Research (I2OR)
(An Organized Research Platform)
Melbourne, Australia

DR. RAJEEV KUMAR SRIVASTAVA
Managing Director/Chief Editor/Publisher

Vol.-13, No.- III, Issues-XVIII, YEAR- Dec.-2020
www.aryavartsvs.org.in

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING
COLLEGE, MADHUPUR
(JHARKHAND)

I2OR Publication Excellence Award 2018
I2OR Excellence International Journal Award 2019

Scanned with OKEN Scanner

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO UPBIL04292
RNI REG NO UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 222-224

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol -13, No -III, Issues-18, YEAR- Dec -2020

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेग, रुचियों एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में अध्ययन

जनार्दन यादव
नीता तिवारी
Email : rajirao30k@gmail.com

Received- 21.11.2020, Revised- 26.11.2020, Accepted - 29.11.2020

सारांश– किसी भी व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। बालक अपने शिक्षा को ध्यान में रखकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है तथा जीवन का जो लक्ष्य निर्धारित करता है उस पर उसके माता–पिता, परिवार के सदस्यों की रुचियां, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, शिक्षा, अभिवृत्ति, व्यक्तिगत मूल्यों का प्रभाव पड़ता है। कोई भी बालक मिलने वाली सफलता को किस दृष्टि से स्वीकार करता है। इसके अतिरिक्त अन्य परिस्थितियां तथा बालक के घर तथा पास पड़ोस हुआ वातावरण का व्यक्तित्व बालक को प्रभावित करता है। मानव जीवन सभी रूपों में सर्वश्रेष्ठ है। अनेक प्रकार के मूल्यों से आत्मसात मानव जीवन में व्यक्तित्व का विशेष प्रभाव पड़ता है। यह व्यक्तित्व मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करते हैं तथा उनके आधार पर वह अपने जीवन के लिए लक्ष्य तय करके व्यवसायिक आकांक्षाओं का निर्माण करते हैं। व्यक्तित्व मानव जीवन के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण होते हैं। किसी भी समाज में व्यक्तित्व का विकास एक दिन में नहीं अपितु मनुष्य के दीर्घ अनुभव के परिणाम स्वरूप होते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेग, रुचियों एवं व्यवसायिक आकांक्षाओं का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन किया गया है।

कुंजीभूत शब्द–यक्तित्व, बालक, प्रभावित, सर्वश्रेष्ठ, आत्मसात, मानव, व्यक्तित्व ।

1. शोध अध्येता 2. असिस्टेंट प्रोफेसर शिक्षक शिक्षा विभाग, कुटीर पी०जी० कॉलेज, चवके जौनपुर (उ0प्र0), भारत

अनुरूपी लेखक

अभिवृत्ति किन्हीं परिस्थितियों में व्यक्तियों या वस्तुओं के प्रति संगत ढंग से प्रतिक्रिया करने की स्वाभाविक तत्परता है। जिसे सीख लिया गया है तथा जो व्यक्ति विशेष के द्वारा प्रतिक्रिया करने का विशिष्ट ढंग बन गया है। अभिवृत्ति के द्वारा ही छात्रों में किसी कार्य, परिस्थिति योजना को बनाने से होती है। यह धनात्मक एवं ऋणात्मक हो सकती है। जो छात्रों के अनुभव के द्वारा विकसित होती है जिसकी प्रवृत्ति वातावरण जन्म होती है। इसके विकास में प्रत्यक्षीकरण तथा संवेगात्मक कारकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। रुचि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व के एक महत्वपूर्ण विमा है। शारीरिक गठन, मानसिक योग्यता, स्वभाव, आचार–विचार, बुद्धि,अभिक्षमता, अभिवृत्ति इत्यादि तरह की रुचियों में भी व्यक्तिगत विभिन्नता में पाई जाती हैं। छात्रों के रुचि के द्वारा कोई प्रशासनिक अधिकारी बनना चाहता है, कोई डॉक्टर, वकील, इंजीनियर ये व्यक्ति के विशेषताओं और रुचियों के आधार पर ही होती है। युवा वर्ग किसी व्यवसाय विशेष की आकांक्षा रखते हैं परंतु उसे उस व्यवसाय में अपेक्षित व्यक्तित्व एवं व्यवसायिक योग्यताओं के विकास में जानकारी नहीं है। कई बार तो उसका विषय वर्ग भी उसकी व्यवसाय का आकांक्षा से मेल नहीं खाता है। ऐसी स्थिति में वह भविष्य में अपने इच्छित व्यवसाय नहीं अपना पाते तथा कई मनोवैज्ञानिक समस्याओं का शिकार हो जाते हैं। यदि उपयुक्त समय पर उन्हें जानकारी प्राप्त हो तो वे अपनी आकांक्षा के अनुरूप विषय वर्ग का चयन कर सकते हैं अथवा विषय वर्ग के अनुरूप अपनी आकांक्षा में परिवर्तन कर सकते हैं।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण– सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधो एवं अभिलेखों आदि से है, जिसके अध्ययन से अनुसंधान कर्ता को समस्या चयन परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रुपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है स्टूडर्ड एवं अन्य (2010) ने विद्यार्थियों के हिंसात्मक व्यवहार पर अध्ययन किया अपने शोध में आप ने पाया कि उम्मीद के खत्म होने से ही हिंसात्मक व्यवहार का आरंभ होता है और आयु बढ़ने के साथ–साथ कम होता जाता है। भविष्य के प्रति आशान्वित रहने की भावना को यदि विकसित किया जाए तो हम विद्यार्थियों के हिंसात्मक व्यवहार को कम कर सकते हैं। रहमान एवं नाहर (2013) ने बांग्लादेश के किशोर एवं किशोरियों की आक्रामकता का शैक्षिक उपलब्धि एवं स्थानीय वातावरण के संबंध में अध्ययन किया अपने अध्ययन में पाया कि लड़कों में लड़कियों की अपेक्षा अधिक आक्रामकता होती है। अपने अध्ययन मे यह भी पाया कि जिन विद्यार्थियों में उच्च आक्रामक्तामता पाई जाती है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होती है जोशी एवं रिजवान 2015 में किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेग के प्रभाव का अध्ययन किया और अपने अध्ययन में पाया कि छात्र और छात्राओं की आक्रामकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया किंतु लड़कियों की आक्रामकता लड़कों की तुलना में अधिक होती है आक्रामकता का स्तर लड़के और लड़कियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया आक्रामकता स्तर का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि तथा छात्राओं की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा एवं उपलब्धि वाले किशोरों एवं आक्रामक स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा उसे किशोरियों एवं शैक्षिक

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING
COLLEGE, MADHUPUR
(JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

RNI TITLED No.: UPBIL 04292
Society REG. No.: AZM 561/2013-14

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA

1. Place of Publication : Ballia (U.P.)
2. Periodicity of its Publication : Annual
3. Printer's Name : Ravi Offset
   Address : Dwarikapuri (Near Roadways), Ballia (U.P.)
4. Publisher's Name : DR. Rajeev Kumar Srivastava
   Nationality : Indian
   Address : Harpur Nai Basti, Ballia (U.P.)
5. Editor's Name : DR. Rajeev Kumar Srivastava
   Nationality : Indian
   Address : Harpur Nai Basti, Ballia (U.P.)
6. Name of the Owner : DR. Rajeev Kumar Srivastava
   Address : Harpur Nai Basti, Ballia (U.P.)

JOURNAL PROMOTES

- Social And All Thoughts Development
- Research Development
- Linkages Between Social And Physical Science
- Exchange Of Ideas Between Development Professionals
- Planers And Policy Makers
- Protect Environment And Develop In Rural Area
- Multi-disciplinary Subjects- Hindi, Social Science, Science, English, Arts, Environmental Science, Computer Science, Mathematics, Accounting And Finance Other all Subjects.

Published by:
ARYAVART SHODH VIKAS SANSTHAN
HARPUR NAI BASTI
DISTRICT-BALLIA-277001, UTTAR PRADESH INDIA

Price 1650/-

Contact/Follow us on :
E-mail : aaryvart2013@gmail.com,
editor.board2013@gmail.com
Cell. +91-96 16 423 071
//aryavart shodh vikash patrika
@aryavart shodh vikash patrika
the aryavart shodh vikash patrika

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING
COLLEGE, MADHUPUR
(JHARKHAND)

डॉ0 राजीव कुमार श्रीवास्तव, एम0फिल0, पी-एच0डी0, स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा रवि ऑफ सेट, द्वारिकापुरी नियर रोडवेज, बलिया-277001 उत्तर प्रदेश से मुद्रित तथा कार्यालय, हरपुर नई बस्ती, बलिया-277001(उ0प्र0) से प्रकाशित एवं प्रसारित। सम्पादक- डॉ0 राजीव कुमार श्रीवास्तव, एम0फिल0, पी-एच0डी0।

Sub Printers: Neha Printers Offset, Ballia (U.P.)

Scanned with OKEN Scanner

OUR PUBLICATIONS

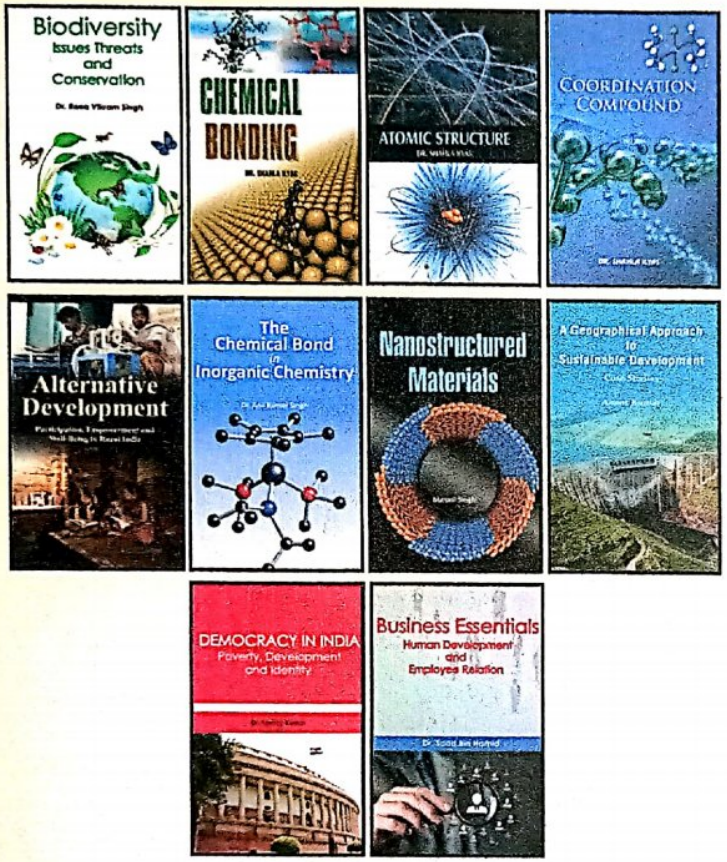

Globus Press
448, Pocket-V, Mayur Vihar Phase-1, Delhi-110091 (INDIA)
Ph. : 011-2275 3916,22793136

ISSN 0974-9888

वर्ष 12 अंक 4 अक्टूबर-दिसम्बर 2020 मूल्य ₹ 2000

मतादर्श

सामाजिक विज्ञान, मानविकी एवं वाणिज्य की शोध पत्रिका

Peer Review & Refereed
A Multi Subject Bilingual Journal
IMPACT FACTOR: 4.7432

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING COLLEGE, MADHUPUR (JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

Ulatrasonic Studies on Some Schiff Bases

Rachana Kumari

Assist. Prof. of Physical Science, Department of Education, Chanakya Teachers Trainning College, 52 Bigha Sapaha, Madhupur, Deoghar, Jharkhand

Abstract:

The present study, the Schiff base of benzaldehyde with p-bromoaniline and benzaldehyde with p-nitroaniline prepared .The ultrasonic study have been done and different acoustical properties of such as Ultrasonic velocity (Us), adiabatic compressibility (bS), Specific acoustic impedance (Z) and Intermolecular free length (L_f) in three different solvents viz DMSO, acetone and DMSO+Acetone mixture have been investigated.The ultrasonic study on Schiff's bases concluded that the ultrasonic velocities with varying concentration of schiff's bases were found to be highest in DMSO and lowest in acetone and when proportion of DMSOdecreases, the corresponding ultrasonic velocity through the mixture alsodecreases.Intermolecular free length(L_f) decrease linearly and hence increased in ultrasonic velocity observed with increase in concentration of Schiff base. It was occurred due to strong interaction between solvent and ion molecules suggesting a structure promoting behavior of the added electrolyte. The specific acoustic impedance (Z) increased with the increase in concentration of Schiff base. When concentration of electrolyte was increased, increase in ionic strength is observed hence the thickness of oppositely charged ionic atmosphere is decreases. This is suggested by increase in acoustic impedance with concentration in system. It was seen that when concentration in system increases the intermolecular free length is decreases. As the concentration of solution increases, the adiabatic compressibility is decreases. The decrease in to collection of solvent molecule around solute molecules indicates that there are solute-solvent interaction are presence. This indicates that there is strong interaction between solvent and solute molecule in solution and the solution is becoming more and more compressible.

Introduction

Compounds containing azomethine group (–C=N–) usually known as Schiff bases which have been synthesized by the condensation of primary amines with active carbonyls compounds such as aldehydes or ketones. The term Schiff's bases were named to honour the Scientist Ugo Joseph Schiff, one of the founders of modern chemistry. The Schiff base metal complexes have occupied an important position inthe modern inorganic chemistry. The interest in these compounds arises fromtheir various applications in the field of bioinorganic chemistry. The Schiffbases are known for their biological importance. Recently

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING
COLLEGE, MADHUPUR
(JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

OUR PUBLICATIONS

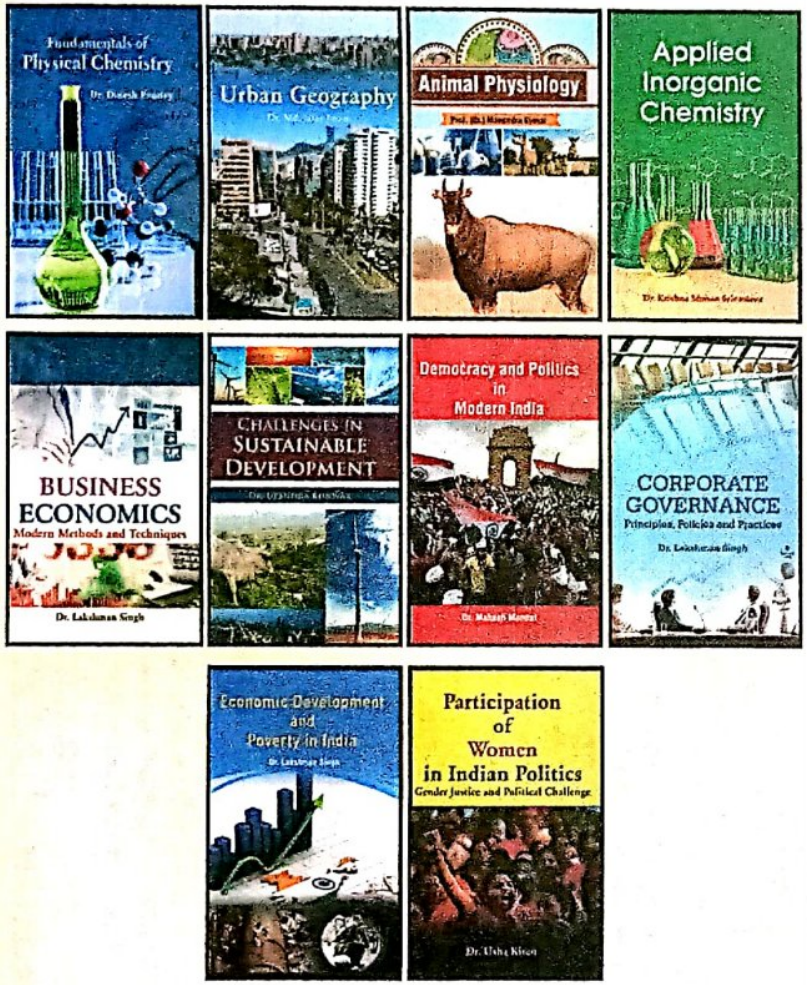

Globus Press
448, Pocket-V, Mayur Vihar Phase-1, Delhi-110091 (INDIA)
Ph. : 011-2275 3916,22793136

OUR PUBLICATIONS

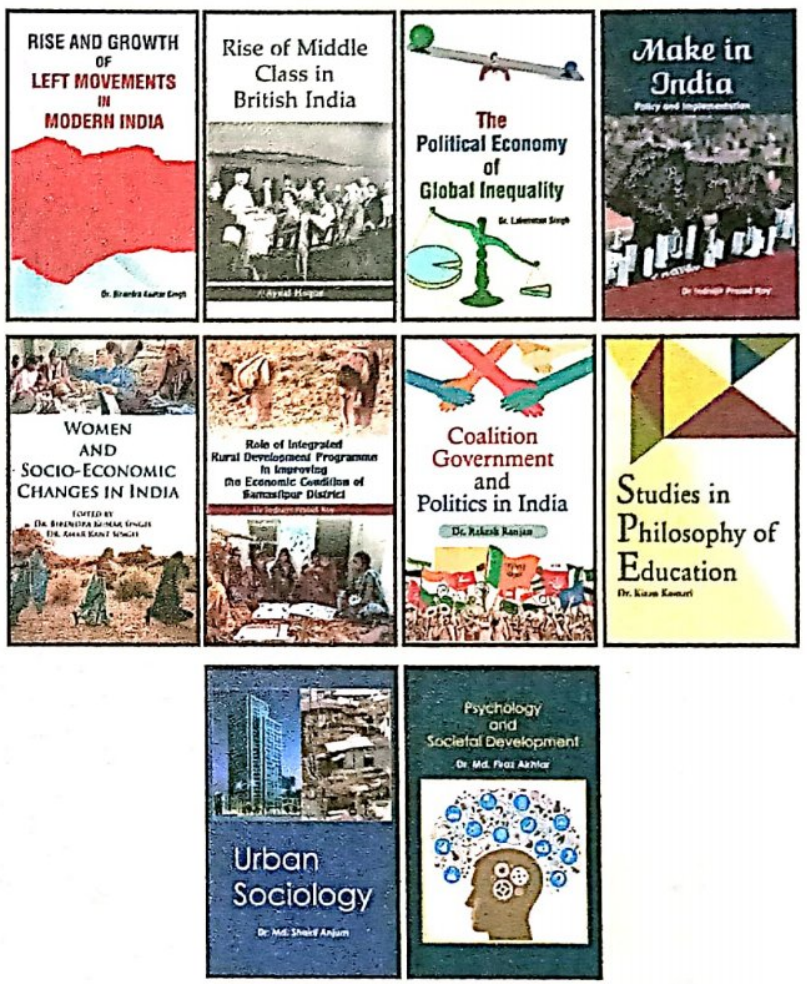

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING
COLLEGE, MADHUPUR
(JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

Multi-Disciplinary Research Journal

ISSN: 2349-0071 Peer Review Journal Jun. 2021, Volume VI, No. II

AYUSHMAN

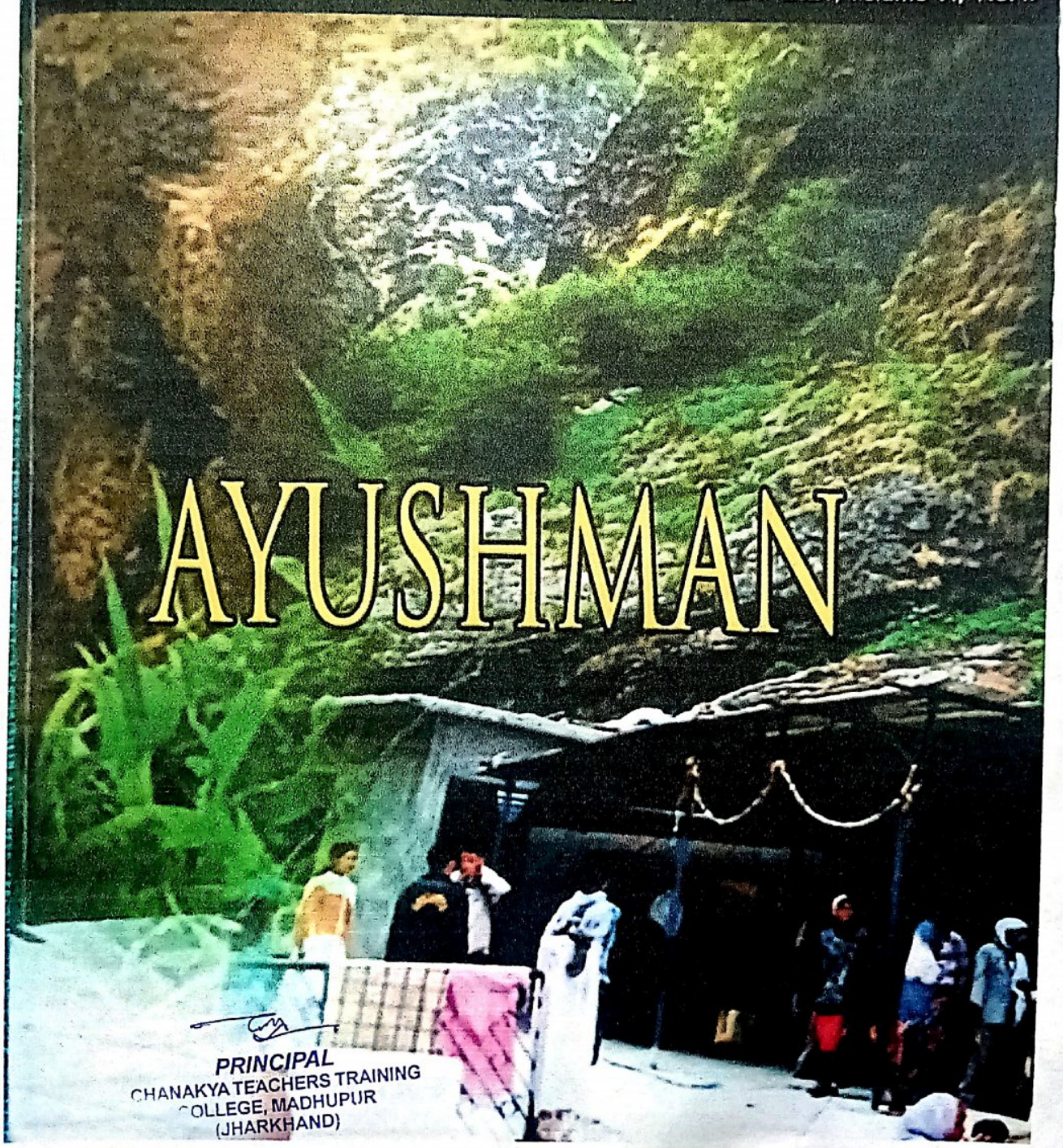

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING
COLLEGE, MADHUPUR
(JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

©Ayushman Publication House
Multi-Disciplinary Research Journal *Ayushman*
Vol. 6 No. 2 Page 179-195 Jun 2021
ISSN 02349-0071 Peer Review Journal

इस्लामी शिक्षा दर्शन

*डॉ. दिनेश कुमार यादव

जीवन संबंधी कुछ आधारभूत प्रश्न हैं; जैसेमनुष्य का सच्चा स्वरूप क्या है? सृष्टि की अंतिम सत्ता क्या है? उसमें मनुष्य का वास्तविक स्थान क्या है? आदि। इन प्रश्नों का उत्तर देना दर्शन का काम है। अनुभवों के आंतरिक अर्थों की खोज उसका परम लक्ष्य है। जो विचार सब सीमाओं को पार करता हुआ अंतिम अर्थ तक पहुँचने का उद्देश्य लिए हुए न हो, वास्तव में उसे दार्शनिक विचार नहीं कह सकते। अनुभवों के पारस्परिक विरोधों को दूर करना और उनमें अनुरूपता एवं अनुकूलता स्थापित करना दर्शन का मुख्य कार्य है। विज्ञान जगत और जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में एक विशेष सुसंगठित ज्ञान का प्रतिपादन करता है। विज्ञान केवल प्रस्तुत वस्तुओं तथा घटनाओं का वर्णन है परन्तु उनकी व्याख्या करना दर्शन का काम है। दर्शन सम्पूर्ण संसार को एक सामूहिक एवं संगठित ज्ञान प्रदान करता है, जिससे मनुष्य शाश्वत सत्य की दिशा में अग्रसर होता है।

कुरान के दृष्टिकोण से वास्तविकता के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की दार्शनिक विधि वह नहीं है, जिसे साधारणतः दार्शनिक अपनाते हैं। कुरान का कहना है कि लोगों के पथभ्रष्ट होने का मूल कारण यह है कि वे केवल अनुमान से काम लेते हैं तथा अटकल और अनुमान को ही सत्य की खोज का एकमात्र साधन समझते हैं और फिर अनुमान से वास्तविकता के प्रति जो कुछ विचार वे निर्धारित कर लेते हैं, उसके आगे हठधर्मी और पक्षपात के कारण किसी की नहीं सुनते। जबकि उनके पास काल्पनिक बातों और अनुमानों के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता।

कुरान का कहना है कि वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त करने का सही तरीका यह है कि हम हर प्रकार के पक्षपात से रहित होकर स्वतंत्रतापूर्वक उन पैगम्बरों का बयान सुनें, जिनका दावा है कि वे कोई बात अटकल और अनुमान से नहीं कहते। उनकी कोई बात काल्पनिक नहीं होती बल्कि वे जो कुछ कहते हैं, वह उस 'ज्ञान' पर अवलम्बित होता है, जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान किया है। पैगम्बरों का बयान सुनने के बाद हम इस रहस्यमय जगत पर दृष्टि डालें और इसमें पाये जाने वाले सूक्ष्म संकेतों को व्यवस्थित क्रम में लायें तथा उनसे नतीजा निकाल कर यह देखें कि इस प्रत्यक्ष के पीछे स्थित जिस वास्तविकता की सूचना 'पैगम्बर' देते हैं, उसमें उसके लक्षण और उसकी ओर संकेत करने वाले चिन्ह पाये जाते हैं या नहीं। यदि उसकी ओर संकेत करने वाले चिन्ह पाये जाते हों, और यह जगत उसके यथार्थ होने का

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING
COLLEGE, MADHUPUR
(JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ) *with* International Impact Factor 7.352
Peer Reviewed Journal

e-ISSN No. 2394-8426
June-2023
Issue–I(V), Volume–XI

Issue on "Multidisciplinary Approach In Research" Dt.30-June-2023 With Collaborate Continuing Professional Development Event, New Mumbai

The Impact of Music on Human Development and Mental Health

Mr. Manoj Chatterjee
Assist. Professor in Music, Department of education
Chanakya Teachers Training College
Madhupur, Deoghar,

Abstract: *These activities not only allow one to express their deepest sentiments and states, but also have a good impact on those who participate in them. According to research in the sciences that are associated to music, effective participation in music can positively benefit a range of aspects of human existence, including physical, social, educational, and psychological (cognitive and emotional) ones. According to Biasutti and Concina (2013), there is a growing amount of empirical and experimental evidence on the general benefits of musical activity. Learning in and via music can occur in official contexts (like scheduled sessions in school) as well as non-formal settings (like at home with family and friends), frequently non-sequentially and not necessarily on intention, and in environments where involvement in music is encouraged.*

Keywords: *Human Existence, Psychological Development, Music Learning, Social Learning.*

Introduction: The 21 brand-new research articles included in this special edition broaden our understanding of the many ways that music can promote human development and wellbeing. Each essay in the book draws from the research of 88 researchers from 17 different countries and offers an illustration of how music can relate to other important aspects of human functioning. The papers collectively provide offer illustrations of many contemporary research approaches. These show how different research goals related to the larger benefits of music demand careful and appropriate methods. Poutine and other foods.Demonstrate how music education is predicted to improve students' sound encoding in the 9 to 15 age range and how it relates to reading abilities in terms of childhood and adolescence, for example. A different Finnish study by Saarikallio et al. illustrates the impacts of musical listening on teens' reported feelings of agency and emotional well-being, but it also demonstrates how these effects are highly variable by context and individuality. Stewart et al.'s Australian study of adolescents at risk for depression focuses on various facets of mental health. The essay explores how, despite existing research supporting the positive effects of music for mood regulation, music consumption can actually maintain or intensify a bad mood.

Studies have shown a connection between informal musical experiences in the home and specific aspects of language development, suggesting that younger, preschoolers can benefit from musical activities as well. A significant connection between melody perception and grammar acquisition was found in an India study by Politico et al., which was previously unrecognized in developmental research. Meanwhile, rhythm perception and production were the leading predictors of early children's phonological awareness. Barrett and associates in another preschool study, examined the attitudes and values of Australian early childhood and care practitioners about the role that music provides to young children's learning. Despite having little formal training and little personal musical experience, practitioners usually tended to have positive attitudes towards music; nevertheless, this was oriented towards music as a hobby.

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING COLLEGE, MADHUPUR (JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 7.352
Peer Reviewed Journal

e-ISSN No. 2394-8426
Sept-2023
Issue–III, Volume–XI

Effectiveness Of Concept Mapping Model And Concept Attainment Model In Geography Teaching At Secondary Levels

Author name- Sangita Das
Institution; Chanakya Teachers Training College, 52 Bigha, Sapaha, Madhupur, Deoghar, Jharkhand, 815353
Department of Education
Email- sangitaeducation88@gmail.com

Abstract: It is vital to take a quick glance at the idea of education, to have a deeper grasp of education and the specific research issue in this thesis, as it existed in the West and in India. Both the Hellenic and Christian traditions were present in Western culture. Two contradictory theories concerning human nature are included inside it. Greek perspective considered man as a logical animal and believed in Christianity perceived the human being as a Greek philosophers placed great emphasis on the dual and sensual character of men. and logic. Christianity introduced a further, more pervasive dualism. into the supernatural and natural sides of human nature. Man's ultimate goal is to serve God and experience delight and eternal life. Accordingly, educational objectives were established. Western intellectuals had varying perspectives on schooling. Socrates, for instance, saw it as a vehicle for bringing concepts of universal applicability. Aristotle viewed it as the formation of a sound mind in a sound body, placing emphasis on the growth of different human capacities. Milton viewed education as a tool that allowed people to have the abilities necessary to carry out a variety of official tasks during both times of peace and conflict.

Key points: Intellectual perspectives, Human nature, Human ability, conflict.

Introduction: Closer to home, the fact that the word "Shiksha" is derived from the Sanskrit verbal root "Shas" establishes the presence of the concept of education. In those days, the educated elite spoke Sanskrit as their primary language. Shas is an Arabic term that means "to discipline," "to teach," "to instruct," or "to control." Similar to "Vidya," which meaning "to know," is derived from the Sanskrit verbal root "Vid." The word "Vidya" actually refers to knowledge. India placed a strong emphasis on mental discipline and information development. The idea of education in India had a structural bias since, up until the formation of a more equal social order with the infusion of western ideas during the colonial period, it was thought that the right to education was only the province of upper castes. Therefore, the learned classes, Brahmins and Kshatriyas, Different roles were fulfilled by other castes lower on the social hierarchy in the through learning skills from family tradition and contributing to society. Family tradition-based education was another method of instruction that was very different from the formal education system in use before the Middle Ages period. An international university was located there during the ancient era. International students are being welcomed by Taxila. After the post Persian influence can be seen in cultural life throughout the Alexander period. Architecture, sculpture, and the arts. Buddhism contributed its own influence on Indian education that led to the establishment of Nalanda University which Bakhtiyar Khilzi demolished in 650 AD after it had existed for 650 years roughly 100 AD. Madrasa system evolution then came next.

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING COLLEGE, MADHUPUR (JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

Sept-2023 ISSUE-III, VOLUME-XI

Published Quarterly issue
e-ISSN 2394-8426 International Impact Factor 7.352
Peer Reviewed Journal | Referred Journal

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING
COLLEGE, MADHUPUR
(JHARKHAND)

Published On Date 30.09.2023

Issue Online Available At: http://gurukuljournal.com/

Organized By

Continuing Professional Development Events, New Mumbai
Gurukul International Publishing Services, Pune

Published By

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal
Mo. +919273759904 Email: gimrj12@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 7.352
Peer Reviewed Journal

e-ISSN No. 2394-8426
Sept-2023
Issue–III, Volume–XI

A Comparative Study of Psychological Well-being in Athlete and Non-Athlete Students in West Bengal

Author name- Soumen Ghorai
Institution; Chanakya Teachers Training College, 52 Bigha, Sapaha, Madhupur, Deoghar, Jharkhand, 815353
Designation- Assist. Prof. of Physical Education
Department of Physical Education
Email-soumenghorai286@gmail.com

Abstract:
The current study sought to investigate and compare the psychological well-being of athlete and non-athlete pupils. The study's population includes all female athletes (swimming and mountaineering) and non-athlete students at the Kalyani university, Kalyani Branch, who studied between 2021 and 2022. The sample is made up of 150 volunteers drawn from the general community via convenience sampling (40 swimmers, 40 mountaineers, and 120 non-athletes). The current study is descriptive and ex post facto. Data was gathered using Bartone's Hardiness Questionnaire. The Chi-square test was used to compare the psychological well-being of athletes and non-athletes. The findings revealed a strong association between psychological well-being and kind of activity (athlete vs. non-athlete) (; ; 1). The findings of one-way ANOVA revealed that the difference in psychological well-being between the two groups is statistically significant at the 95% confidence level. However, post hoc analysis revealed that only the difference between swimmers and non-athletes is significant. Swimmers, according to these data, show a higher level of psychological Well-being than the other two groups. They can cope with external challenges more easily, and one of the tactics they use is psychological well-being.

Keywords
Psychological well-being, Athletes, Non-Athletes, Swimming.

Introduction:

Over time, humans have discovered that some events can risk their health, balance, comfort, and adaption. However, research has shown that stress does not necessarily result in disease and maladaptation. Athletes' performance nowadays is influenced by a number of things. Athletes' mental abilities in various sports vary based on the demands of each discipline. Furthermore, in highly competitive settings where athletes' physical fitness reaches its peak, psychological variables play a critical part in their success. One of the most significant attributes of successful sportsmen is psychological well-being. It is a multifactor structure that everyone has to some degree, and it is made up of three components: commitment, control, and challenge. Hardy people have grasped the significance, worth, and purpose of themselves, their jobs, and their lives in general. They value effort over chance and believe that they have influence over life's occurrences. They think that events, both happy and terrible, are the result of one's deeds. They also see change as a constant and an opportunity for learning and growth, rather than a threat to their safety. Hardy people see occurrences as good and manageable rather than terrifying. Researchers believe that a number of factors influence the link between stress and disease. Certain qualities in some people boost their resilience to stress and help them avoid its

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING COLLEGE, MADHUPUR (JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner

BHARATI INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH AND DEVELOPMENT (BIJMRD)

(Open Access Peer-Reviewed International journal)

Doi number: 12.2023-81282512

Available Online: www.bijmrd.com |BIJMRD Volume: 1 | Issue: 1 | Dec 2023 | e-ISSN: 2584-1890

Contribution of Physical education practice reflecting on student achievement

Soumen Ghorai

Assistant Professor, Department of Physical Education ,Chanakya Teachers Training College, 52 Bigha, Sapaha,,Madhupur, Deoghar, Jharkhand, 815353 Email.- soumenghorai286@gmail.com

Abstract- *Despite the fact that the theory/practice dichotomy in physical education (PE) practice seems to be challenging to manage, this study suggests that instructors may support students in developing holistic competencies, which include aspects of both theoretical and practical knowledge. Therefore, we work to re-evaluate how theory and practice relate to physical education practice and suggest ways that PE instructors might link different types of knowledge with their students. In doing so, we look at reflection, which has traditionally been one of the most widely used techniques for bridging theory and practice.*

Keywords: *Physical education, Practical knowledge, Theoretical knowledge, Holistic competence.*

Introduction: "Physical education (PE) students are supposed to acquire a broad variety of information about movement and/or though" (Arnold, 1979). Some of this information is seen to be more theoretical (knowledge of the body's workings or health-related topics, for example), while other knowledge is thought to be more practical (knowledge of various motor skills in and via movement and other types of movement learning). "Finding ways to teach PE that enables students to integrate and link many sorts of knowledge has been the main emphasis for decades. For example, over 25 years ago, McBride and Cleland" (Citation1998) argued that critical thinking was necessary, based on their assertion that 'cognitive difficulties must connect with movement-oriented activities' (42); their article's subtitle, 'Putting theory where it belongs', confirmed this. However, "recent studies have shown that theory and practice are still seen as a binary that makes it difficult to deal with in physical education practice. For instance, a Swedish research by Sternberg" (Citation2017) found that evaluations of students' comprehension of and via movement had been replaced with written assignments designed to gauge their theoretical knowledge of movement. Teaching anatomy and physiology as part of physical education has, in the words of Casey and O'Donovan (Citation 2015), "shifted the curriculum from a practical to a theoretical one" and brought parts of physical education from the playground and gymnasium into classrooms (354). Bowes (Citation2010) also questioned why students in New Zealand seem

PRINCIPAL
CHANAKYA TEACHERS TRAINING COLLEGE, MADHUPUR (JHARKHAND)

Scanned with OKEN Scanner